पत्रिका PLUS Weekend

Jabalpur. Saturday
16/03/2019

PATRIKA.COM/ENTERTAINMENT

शहीद स्मारक ऑडिटोरियम में जादू स्वाभिमान दिवस पर आयोजन

जादुई करतबों ने किया सभी को चकित

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

जबलपुर ◆ जादुई करतबों का गवाह शहीद स्मारक ऑडिटोरियम बना। इस दौरान जहां कई हैरतअंगेज करतबों को जादूगरों ने दिखाया, वहीं जादू और अंधविश्वास के लोगों को अंतर पहचानने के बारे में भी बताया। शुक्रवार को शहीद स्मारक ऑडिटोरियम में जादू स्वाभिमान दिवस मनाया गया। जादूगर एसके निगम के जन्मोत्सव के रूप में आयोजित इस समारोह में इस वर्ष राजस्थान और कोलकाता जादूगरों को बुलवाया गया। इस दौरान जादूगर प्रिंस सिल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया गया। इसके साथ ही जादूगर प्रहलाद राय को जादू स्वाभिमान सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम में आतिथ्य भूमिका में मंत्री तरुण भनोत, मंत्री लखन घनघोरिया, पूर्व मंत्री अजय विश्नोई, विधायक विनय सक्सेना, महाधिवक्ता एड राजेन्द्र तिवारी, समाजसेवी बाबू विश्वमोहन, जीएसटी कमिश्नर पीके अग्रवाल, नेता प्रतिपक्ष राजेश सोनकर ने निभाई। कार्यक्रम में जादूगर एसके निगम की पांच दशकों की उपलब्धियों पर चर्चा की गई और डाक टिकट का विमोचन भी किया गया। इस मौके पर एसपी शुक्ला, रवि शंकर श्रीवास्तव, प्रतुल श्रीवास्तव, विजय जायसवाल आदि उपस्थित थे।

ANCHOR शुक्रवार को शहर में राजस्थान और कोलकाता के बड़े जादूगरों ने की संस्कारधानी में शिरकत

जादूगर एक काल्पनिक किरदार है और हम सब उसे बखूबी निभा रहे हैं

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

जबलपुर ◆ दुनिया में जादू जैसी कोई चीज नहीं होती है। जादू को पुराने समय से ही सिर्फ लोगों के मनोरंजन के लिए किया जाता रहा है। यह हाथों की सफाई का एक खेल है। कुछ ठगों द्वारा इसका व्यापार बना लिया गया है और अंधविश्वास के नाम पर आम लोगों को ठगा जा रहा है। दरअसल जादूगर एक काल्पनिक किरदार है, जिसे पुराने समय से अब तक हम सभी निभा रहे हैं। यह कहना था शहर आए उन बड़े जादूगरों का जिनके करतबों की गवाह संस्कारधानी बनीं। इस बीच पत्रिका से बातचीत के दौरान उन्होंने अपने जीवन से जुड़ी बातों को साझा किया...

इस खबर से संबंधित वीडियो देखने के लिए स्कैन करें

मदारी हमारे पूर्वज रहे हैं

अजमेर से आए जादूगर प्रहलाद राय ने बताया कि पहली बार जबलपुर आए हैं, लेकिन यहां आकर ही धरती को नमन किया। क्योंकि यह शहर कई बड़ी शख्सियतों की जन्म और कर्म भूमि रहा है। उन्होंने बताया कि वे 40 सालों से उदयपुर से जादू को समर्पित एक मैग्जीन निकाल रहे हैं, जो विश्व के कई देशों में ऑनलाइन देखी जाती है। इस मैग्जीन का उद्देश्य लोगों को जादू और अंधविश्वास के बीच के अंतर को समझाना है। उन्होंने बताया कि मदारी जादूगरों के पूर्वज हैं, उनके छोटे-बड़ों करतबों को देखकर ही सभी प्रेरित हुए हैं।

दुनिया में चमत्कार जैसी चीज नहीं

अलवर से आए जादूगर शिवकुमार पहले स्टंट मैन थे। इस स्टंट को उन्होंने जादू में तब्दील कर लिया। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि भारत में अध्यात्मिक देश है, जहां लोगों की भावनाओं का फायदा उठाकर ठग अंधविश्वास फैला रहे हैं। ऐसे में लोगों को यह समझना होगा कि दुनिया में चमत्कार जैसी कोई चीज नहीं होती बस हाथों का खेल होता है। जादूगर शिवकुमार देश-दुनिया में 18 हजार से ज्यादा शोज कर चुके हैं। वे कहते हैं जादू का खेल बच्चों के दिमाग को तेज बनाता है, जो अंधविश्वास के मायाजाल से बच सकते हैं।

मैंटल मैजिक से पता लगाते हैं मन

बीकानेर से आए जादूगर मनोज कौशिक की खासियत है कि वह मैंटल मैजिक करने में माहिर हैं। मैंटल मैजिक का मतलब ऐसे मैजिक से है जिसमें बिना कुछ किए और सिर्फ बातों से ही सामने वाले व्यक्ति के मन में चलने वाली बातों का पता लगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि पांचवी क्लास में मदारी को माचिस की डिब्बी में से माचिस गायब करता देख काफी आश्चर्यचकित हुए थे। उस वक्त सोचा कि मैं भी ऐसा कर सकता हूं। इस चक्कर में कई माचिस खराब की, लेकिन मेरे दिमाग में उठे सिर्फ एक प्रश्न से मुझे जादूगर बना दिया।

तालियों की गड़गड़ाहट सुनना चाहता था

कोलकाता से आए जादूगर प्रिंस सिल एक ऐसे जादू का खेल करने में माहिर है जो हैरतअंगेज है। जादूगर प्रिंस ने बताया कि वे 12 बोर की गन से निकली गोली को दांतों से रोक लेते हैं। उन्होंने बताया कि जब वे पांचवी क्लास में थे जब पीसी सरकार के शो में जाकर जादुई दुनिया में खो जाते थे। उस वक्त जब तालियों की आवाज होती थी, जब लगता था कि ये तालियां उनके लिए कब बजेंगी। इसके लिए जुगाड़ किया और बंदूक की गोली को दांतों से दबाने का जादू सीखा। पहले .22 की गोली से शुरुआत की अब 12 बोर तक पहुंचा।